PLATO'S SUBSTANCE

प्लेटो ने पदार्थ (Substance) की धारणा को एक आदर्शवादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। उनके अनुसार, सच्चा पदार्थ वह नहीं जो इन्द्रियों से दिखाई दे, बल्कि वह है जो बुद्धि द्वारा जाना जा सके। उन्होंने पदार्थ को भौतिक नहीं, बल्कि बौद्धिक और आध्यात्मिक वास्तविकता के रूप में स्वीकार किया। इस प्रकार प्लेटो का पदार्थ इन्द्रियजगत से परे, एक शाश्वत और अपरिवर्तनशील सत्ता है।

पदार्थ का स्वरूप (Nature of Substance)

प्लेटो के अनुसार पदार्थ भौतिक तत्वों में नहीं, बल्कि उन शाश्वत सत्य रूपों में निहित है, जो समस्त अस्तित्व की आधारशिला है। वह पदार्थ परिवर्तनशील नहीं होता, क्योंकि परिवर्तन केवल दृश्य वस्तुओं में होता है। सच्चा पदार्थ वह है जो सदा समान, स्थिर और पूर्ण है। इस प्रकार प्लेटो का पदार्थ अपरिवर्तनशील, शाश्वत, बुद्धिगम्य और स्वतंत्र है।

पदार्थ और इन्द्रियजगत का संबंध (Relation between Substance & Sensible World)

जो वस्तुएँ हमें इन्द्रियों से दिखाई देती हैं, वे केवल सच्चे पदार्थ की प्रतिलिपियाँ (Imitations) हैं। वे असली नहीं हैं, बल्कि उस शाश्वत वास्तविकता की छाया मात्र हैं। उदाहरण - एक सुंदर फूल में हमें 'सौंदर्य के पदार्थ' की झलक मिलती है, परंतु वह फूल स्वयं 'सौंदर्य' नहीं है। अतः भौतिक वस्तुएँ पदार्थ नहीं हैं। वे केवल उस पदार्थ की छवियाँ हैं जो रूपों के जगत में विद्यमान है।

पदार्थ की विशेषताएँ (Characteristics of Substance)

1. अपरिवर्तनशील (Immutable): पदार्थ में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता। जो बदलता है, वो वास्तविकता नहीं हो सकता।
2. शाश्वत (Eternal): पदार्थ का न कोई आरंभ है न अंत। वह समय से परे अस्तित्व रखता है।
3. बुद्धिगम्य (Intelligible): उसे केवल विवेक (Reason) से जाना जा सकता है, इन्द्रियों से नहीं।
4. स्वतंत्र (Independent): पदार्थ का अस्तित्व किसी अन्य वस्तु पर निर्भर नहीं होता। वह स्वयं अपने अस्तित्व का कारण है।
5. वास्तविक (Real): यही सच्चा 'Being' है — बाकी सब केवल प्रतीति (Appearance) है।

आत्मा और पदार्थ का संबंध (Relation between Soul & Substance)

मनुष्य की आत्मा अमर है और वह रूपों के जगत से संबंध रखती है। चूँकि पदार्थ उसी रूपात्मक जगत में विद्यमान है, इसलिए आत्मा पदार्थ को पहचान सकती है। ज्ञान का अर्थ प्लेटो के अनुसार पदार्थ का स्मरण (Recollection) है। आत्मा जब इन्द्रियजगत में वस्तुओं को देखती है, तो उसे रूपों या पदार्थों का स्मरण होता है। इस प्रकार, आत्मा ही सच्चे पदार्थ का ज्ञान प्राप्त कर सकती है।

पदार्थ का सर्वोच्च रूप (The Supreme Substance – The Good)

प्लेटो ने कहा कि सभी रूपों में सर्वोच्च रूप है – भलाई का रूप। यह रूप सभी अन्य रूपों का आधार है और समस्त अस्तित्व का कारण है।

निष्कर्ष:

प्लेटो के अनुसार, पदार्थ वह है जो दृश्य वस्तुओं के पीछे छिपा हुआ शाश्वत सत्य है। यह पदार्थ इन्द्रियजगत में नहीं, बल्कि रूपों के जगत में स्थित है। भौतिक वस्तुएँ उस पदार्थ की केवल अपूर्ण प्रतियाँ हैं। अतः प्लेटो का पदार्थ पूरी तरह आध्यात्मिक, शाश्वत और बौद्धिक सत्ता है। यह उनकी दार्शनिक प्रणाली का सबसे गूढ़ और मूलभूत सिद्धांत है।